ईश्वर (शुद्ध आकार) - जगत → निमित्त कारण
→ आकारिक कारण
→ प्रयोजन कारण

अरस्तु के शुद्ध आकार (Pure form) की धारणा

अरस्तु की तत्व मीमांसा में शुद्ध आकार की धारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। उसने ईश्वर को ही शुद्ध आकार कहा है, जिसे अन्य शब्दावली में गतिहीन चालक भी कहा गया है।

अरस्तु ने अपने कारणता सिद्धांत Causation theory में चार कारणों को अन्ततः दो में सीमित किया - पदार्थ (matter) और आकार (form)। जगत की प्रत्येक वस्तु में पदार्थ व आकार संयुक्त रूप में पाए जाते हैं। अपने विकासवाद के अन्तर्गत अरस्तु ने माना कि आकार की अधिकता किसी वस्तु को उच्च स्तरीय बनाती है। पदार्थ व आकार के द्वैत में आगे बढ़ते बढ़ते एक ऐसी स्थिति आती है, जहाँ पदार्थ शून्य हो जाता है और आकार पूर्ण तथा शुद्ध रूप में व्यक्त होता है; यही अवस्था शुद्ध आकार कहलाती है। यह अनुभव जगत का विषय नहीं बल्कि अनुभवातीत रूप में ही समझा जा सकता है। यह ईश्वर की निर्वैयक्तिक धारणा का आरम्भिक रूप है जिसका विकास आगे चलकर कई दार्शनिकों ने किया।

अरस्तु का शुद्ध आकार जगत का सिर्फ आकारिक कारण नहीं है। वह जगत का निमित्त कारण तथा प्रयोजन कारण भी है। वह निमित्त कारण इस अर्थ में है कि जगत की हर वस्तु उसी के कारण गतिशील है, हालांकि वह स्वयं गतिहीन है। इसी धारणा को अरस्तु ने गतिहीन चालक कहकर व्यक्त किया। यही प्रयोजन कारण भी है क्योंकि अरस्तु के प्रयोजनशील विकासवाद में जगत की हर वस्तु सर्वोच्च सत्ता की ओर गतिशील है और यह सर्वोच्च सत्ता ईश्वर ही है।

अरस्तू के अनुसार शुद्ध आकार सत्ता की दृष्टि से द्रव्य है। यहीं अरस्तू के दर्शन में एक समस्या उत्पन्न होती है क्योंकि उसने द्रव्य को आकार युक्त पदार्थ कहकर परिभाषित किया है जबकि शुद्ध आकार में तो पदार्थ है ही नहीं। वस्तुतः अरस्तू के पास तार्किक सुसंगति बनाए रखने के लिए और कोई मार्ग नहीं थी। तब भी वह इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता कि यदि शुद्ध आकार द्रव्य हो सकता है तो प्लेटो के प्रत्यय द्रव्य क्यों नहीं हो सकते?

==x==x==

अरस्तू ने ईश्वर को शुद्ध आकार कहा है। वस्तुतः अरस्तू के दर्शन की केन्द्रीय समस्या पदार्थ और आकार की है क्योंकि प्लेटो के दिक्कालातीत द्रव्यों या प्रत्ययों का खण्डन करते हुए उसने दावा किया है कि जगत की कोई भी वस्तु आकार युक्त पदार्थ ही होती है क्योंकि पदार्थ रहित आकार और आकार रहित पदार्थ कोरी कल्पनाएँ मात्र हैं। इस अर्थ में शुद्ध आकार या ईश्वर की धारणा महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि इस बिन्दु पर अरस्तू अपने मूल विचार से विचलित हुआ है।

अरस्तू के अनुसार जगत की प्रत्येक वस्तु में पदार्थ और आकार का विशिष्ट अनुपात होता है, जिसमें आकार की अधिकता उच्चस्तरीय वस्तुओं का

लक्षण है तो पदार्थ की अधिकता निम्न स्तरीय वस्तुओं का। उसने अपने विकासवाद में स्पष्ट किया है कि यान्त्रिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत तथा मानव जगत में आनुपातिक भिन्नता है, पूर्ण भिन्नता नहीं। किंतु अनुभव जगत से परे निम्नतर स्तर पर आकार रहित पदार्थ की कल्पना की जा सकती है तो उच्चतम स्तर पर पदार्थ रहित आकार की भी। यह पदार्थ रहित आकार अथवा शुद्ध आकार इस विकासवाद का सर्वोच्च तार्किक चरण है जिसकी ओर सभी पदार्थ युक्त वस्तुएं आकर्षित एवं उन्मुख हैं।

अरस्तू का शुद्ध आकार यूं तो सिर्फ तार्किक धारणा है किंतु संभवतः तत्कालीन दबावों के कारण या अमूर्त विचार को मूर्त बनाने के लिए उसने शुद्ध आकार को ईश्वर का नाम दिया। इस अर्थ में शुद्ध आकार न केवल इस सम्पूर्ण जगत का आकारिक कारण है बल्कि सभी को आकर्षित करने के कारण प्रयोजन कारण भी है और विश्व में विद्यमान प्रत्येक गति का गतिहीन आधार होने के कारण निमित्त कारण भी है। अरस्तू ने अपने कारणता विचार में कहा भी है कि निमित्त, आकारिक तथा प्रयोजन कारण एक ही है और जगत के सन्दर्भ में वही ईश्वर या शुद्ध आकार है।

इस विचार पर आक्षेप यह है कि एक तरफ तो अरस्तू द्रव्य की परिभाषा आकार युक्त पदार्थ के रूप में करते हैं जबकि दूसरी ओर यहाँ द्वितीय अर्थ में शुद्ध आकार या ईश्वर को भी द्रव्य मान लेते हैं। प्लेटो के परलोकवाद से बचते हुए अन्ततः इस बिन्दु पर आकर उसे भी परलोकवाद से जुड़ना पड़ा।